सादर प्रकाशनार्थ

पूर्ण प्राज्ञ विभूति आचार्यश्री महाप्रज्ञ

– डॉ. धनवंत शाह

अनुवाद – मुनि जयंतकुमार

गुजराती पत्रिका प्रबुद्ध जीवन के सम्पादक डॉ. धनवन्त शाह द्वारा लिखित सम्पादकीय से आप जान सकते हैं कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ केवल तेरापंथ एवं जैनों के आचार्य ही नहीं थे बल्कि जैन–अजैन लाखों लोगों के दिलों पर राज करने वाले महापुरुष थे। इस सम्पादकीय से कुछ अंशों को यहां प्रस्तुत किया जा रहा है। (सम्पादक)

9 मई 2010 की रात्रि में अध्यात्म जगत के उज्जवल नक्षत्र, तेरापंथ संघ के दशम आचार्य वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के महाप्रयाण का संवाद सुना, तब एक बारगी हृदय धड़कना भूल गया। एक तीव्र दुखानुभूति से हृदय चित्कार से भर गया। दुर्भाग्य उपर शाप देने का मन हो गया। इस युग के ऐसे महापुरुष के देहदर्शन से कैसे वंचित रह गया?

थोड़े दिनों पहले ही पूज्य आचार्यश्री के प्रबुद्ध ज्ञान के विद्वान मित्र नीतिन सोनावाला एवं दीप्ति बहन के साथ चर्चा करते समय उनको विनती की थी कि जब आप दंपति पूज्यश्री के दर्शन करने जायें तो मुझे ले जायें, मुझे पूज्यश्री के दर्शन कर तीर्थंकर दर्शनों के आनन्द की अनुभूति करनी है। नीतिनभाई ने मुझे वचन दिया, परंतु मेरा भाग्य बलवान हो तब ना? अब इस दुख के साथ जीना होगा।

आजादी से पहले तो भारत के तत्त्व का उत्थान करने वाले बहुत से महापुरुष हमें मिले। आजादी के बाद भी अनेक महामानवों ने इस धरती पर विचरण किया, परंतु मेरी समझ प्रमाण इनमें तीन तो गजब के प्रज्ञावान थे। ओशो रजनीश, जे. कृष्णामूर्ति एवं आचार्य महाप्रज्ञ।

लगभग 55 वर्ष पहले इस संस्था श्री मुंबई जैन युवक संघ ने आचार्य रजनीश को वक्तव्य के लिए निमंत्रित किया था। आचार्य रजनीश को खोजने का मुख्य श्रेय संघ के तत्कालिन कार्यकर एवं एक समय के प्रबुद्ध जीवन के सम्पादक पत्रकार जटुभाई मेहता को जाता है, ऐसा मेरी स्मृति में है, कारण कि उस समय जबलपुर से आये हुए दर्शन शास्त्र के प्रो. रजनीश का प्रथम व्याख्यान सी.पी. टेंक के हिराबाग में इस संस्था द्वारा आयेाजित था। तब मैं कॉलेज में था, किन्तु संघ की प्रवृत्तियों के आकर्षण के कारण वह वक्तव्य सुनने में भी गया था, तब रजनीशजी मेरे पर प्रभाव छोड़ गये। उसके बाद तो समग्र मुंबर उपर, भारत उपर एवं प्रदेश में भी रजनीशजी का प्रभाव फैल गया। रजनीश के प्रवचन एवं टेप सुनने और पुस्तकों को पढने का मुझे नशा हो गया। मानो मैं समोहित हो गया। रजनीश इस युग के अप्रतिम बुद्धिशाली मानव थे। उनके जितना विवेचन भाग्य से ही कोई तत्वज्ञ ने किया हो।

परंतु एक मोड़ पर मुझे रजनीश पसंद नहीं आया। विचार और आचार में बहुत विरोधाभास लगा। आचार्य रजनीश भगवान रजनीश, ओशो रजनीश एवं रजनीश कंठी और भगवा कपड़ा धारण करने के बाद भी स्वैर विहार और मुक्त आचार, यह सब मुझे अच्छा नहीं लगा। जो छोड़ना सिखाता है वह नया किसके लिए पहनता है। यह समझ में नहीं आया। रजनीश के शब्द कथा और भाषा का आनन्द देते हैं, तार्किक दलीलों का समूह परोसते हैं और रजनीशजी

से मस्ती मिलती है पर समाधान और शांति नहीं मिलती, ऐसा अनुभव किया। रजनीशजी मैं विवाद और विरोध इतने हैं कि हम उलझ जाएं।

कोई भी विचार जब तद्रा और आदत की तरफ ले जाये तब बुद्धिमान मनुष्य को तुरंत सजग होकर, आसक्ति को छोड़ विवेक के प्रदेश में प्रवेश कर देना चाहिए। श्री चिमनलाल चकुभाई मेहता कहते थे – जब ऐसी परिस्थिति आये कि यह क्रिया किये बिना मन को चैन नहीं होता है' तब आत्मा, मन, इन्द्रियों के साथ थोड़ी बात कर लेनी चाहिए। आदत छूट जायेगी और योग्य निर्णय मिल जायेगा।

उसी कालमान में प्रत्येक फरवरी महीने में जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट के मैदान में जे. कृष्णामूर्ति के प्रवचन आयोजित हुए। जे. कृष्णामूर्ति के पास रजनीश जैसी वक्रता नहीं, परन्तु तर्कशुद्ध दलीलों का शांत बौद्धिक खजाना खरा था। उनको पढ़ा, तब बहुत सी बेड़ियां और ग्रंथियां छूट गई, हलका हो गया, परन्तु प्रमाणिक तत्त्व और सत्य वहां से भी प्राप्त नहीं हुआ। उसके उपरांत जे. कृष्णामूर्ति में विचार और आचार की संवादिता भी खोजनी पड़ती है।

इन दोनों बौद्धिकों से बहुत कुछ प्राप्त करने के बाद भी प्यासे रहने का आभास हुआ। यह लिखने वाले का अनुभव है।

यह शांति, यह समाधान, मुझे आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में मिला। सबसे पहले 'मन के जीते जीत' पुस्तक हाथ में आई और उसके बाद तो जितना संभव पूज्य महाप्रज्ञजी का हिन्दी, गुजराती में प्रकाशित साहित्य पढ़ने का नशा जग गया। जितना उपलब्ध हुआ पढ़ा। प्रत्येक पुस्तक में नये ज्ञानाकाश का दर्शन हुआ। शास्त्रों का पूरा आधार, तार्किक दलीलों, वैज्ञानिक अभिगम, सर्जनशीलता और मौलिकता, सरल शैली और अपने विचार का प्रचार करने का जरा भी आग्रह नहीं। 'मेरी शरण में आओ' या 'मुझे मानो' ऐसा आग्रह तो जरा भी नहीं। अभ्यास और अन्तर दर्शन से पूज्यश्री ने जो जाना वही लोगों को बताया। पाठकों को विचार करने की पूरी स्वतंत्रता मिले ऐसा महाप्रज्ञजी का शब्दकर्म। तेरापंथ के विशाल सम्प्रदाय का संचालन करते करते साधु जीवन की आचार संहिता को पूर्ण रूप से पालते पालते इतना भव्य सर्जन किया कि ऐसा कोई ऋतंभरा प्रज्ञा प्राप्त महामानव ही कर सकता है। विशेष तो विचार और आचार की पूरी संवादिता जैसी वाणी वैसा ही जीवन, जैसा विचार वैसा ही आचार। गांधीजी जैसे ही सत्य तत्त्व के शोधन एवं आग्रही।

आचार्य महाप्रज्ञजी का जीवन कर्म मात्र जैन शासन तक ही मर्यादित नहीं था। पूजयश्री इस
धरती के मानव थे। आपश्री का कर्म एवं संदेश विराट था। व्यक्ति से समष्टि तक था। पूज्यश्री के अवधान एवं संदेश समग्र राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जन जीवन तक फैला था। इसमें पूज्यश्री की भारत अहिंसा यात्रा का कार्य तो सुवर्ण शिखर जैसा था।

ऐसी महाविभुति के जीवन एवं सर्जन पर तो अनेक शोध प्रबंध लिखे जा सकते हैं।

आचार्य हेमचन्द्राचार्य एवं उपाध्याय यशोविजयजी के बाद जैन शासन को ऐसे महापुरुष मिले यह जैन जगत का महासद्भाग्य है।

पूज्यश्री के जीवन एवं साहित्य संसार में भावी पीढी जब गहराई में उतरेगी तब इस पीढी को जरूर आश्चर्य होगा कि ऐसी भव्य प्रज्ञा ने इस धरती उपर अद्भूत विचरण किया था।
मोक्षगामी ऐसे पूज्यश्री की आत्मा को कोटि–कोटि वंदन।